खण्ड-262, अंक-1
गुरूवार, 7 माघ, शक संवत् 1887
(27 जनवरी, 1966 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 262 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६८

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

LIBRARY
2 APR 1966
UTTAR PRADESH

उत्तर प्रदेश विधान सभा

13।7777

बृहस्पतिवार, २७ जनवरी, १९६६

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष श्री होतीलाल अग्रवाल की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—३८१

अक्षयवरसिंह, श्री
अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल सनी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधनारायणप्रतापसिंह, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अशरफ अली खां, श्री
अहमद बख्श, श्री
आनन्दसिंह, कुंवर
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
ऊदल, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओंकारनाथ द्विवेदी, श्री
कंथईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कमलासिंह यादव, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरु)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथबहादुर पाल, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किश्वर आरा बेगम, श्रीमती
कुमार करुणा कृष्ण नायर, श्री
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णपाल सिंह, श्री
कृष्णा, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशव राम, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गंगासिंह विष्ट, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री

गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीनाथ दीक्षित, श्री
गोविन्द सहाय, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्दनसिंह, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रबलीसिंह, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
छांगुर, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशप्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशप्रसाद पांडेय, श्री
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद रावत श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जगवीरसिंह, श्री
जमीलुर्रहमान किदवई, श्री
जयगोपाल, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जसरामसिंह, श्री
जियाउर्रहमान, श्री (उपनाम वक्कन)
जुगलकिशोर, आचार्य
जुगलकिशोर, श्री
जेड० ए० अहमद, श्री
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखण्डेराय, श्री
झिलमिटराम, श्री
टम्बेश्वर प्रसाद, श्री
डल्लाराम, श्री
डूंगर सिंह, श्री
तारा अग्रवाल, श्रीमती
तेजनारायण त्रिवेदी, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम शाक्य, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दशरथप्रसाद, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दीनदयाल करवरिया, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
देशराजसिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पांडेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नत्थूसिंह, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरसिंहनारायण पांडेय, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवरंगसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पांडेय, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौरंगलाल, श्री
पंचमदास, श्री

परमाईलाल, श्री
पार्तीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पूरनलाल, श्री
प्यारेलाल मिश्र, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटसिंह, श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पांडेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बंशीलाल, श्री
बद्रीप्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनवारीलाल विप्र, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह, सरदार
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवानसिंह, श्री
बलबीरसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बसन्तसिंह, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बालोजी अग्रवाल, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजभूषणशरण, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वरसहाय, श्री
बेचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास बरनवाल, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन , श्री
भगवान सहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
भूपसिंह, श्री
मंगल, श्री
मंगलदेव, श्री
मंगलप्रसाद आर्य, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महादेव, श्री
महाबीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महेन्द्रसिंह, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधवप्रसाद त्रिपाठी, श्री
माधोनारायण मुद्गल, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेघनाथसिंह, शिशोदिया, श्री
मेवालाल जायसवाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री
मैनेजरसिंह, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपालसिंह वर्मा, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री

रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीरराम, श्री
रघुवीरसहाय कैथवार, श्री
रतीपाल, श्री
रण बहादुरसिंह, श्री
रमाकान्त सिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथसिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
रामअधार कनौजिया, श्री
रामअधीनसिंह, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे वर्मा, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचरण शाह, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरती, श्रीमती
रामलखन वकील, श्री
रामलखन शुक्ल, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (एटा)
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामायणराय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुकुमसिंह राठौर, कुंवर
रुद्रप्रतापसिंह, कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विजयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पांडेय 'प्रणव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
वीरसेन, श्री
वैजनाथ पांडेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषणसिंह, श्री
शान्तिचन्द्र शुक्ल, श्री
शारदानन्द, श्री
शारदाभक्तसिंह, श्री
शिब्बनलाल सक्सेना, श्री
शिवचरण, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवमूर्ति, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवसम्पति शर्मा, श्री

शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रीपत मिश्र, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यनारायण पांडेय, श्री
सत्यवीर कुंवर, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सालिग्राम जैसवाल, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुचेता कृपालानी, श्रीमती
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजनराम विशारद, श्री
सुरेन्द्रदत्त बाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रविक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजलाल गुप्त वकील, श्री
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगैनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हेतरामसिंह, श्री
हेमराज, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री
होरीलाल यादव, श्री

भूतपूर्व प्रधान मंत्री, श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पिछले महीनों में जब यह सदन बैठा नहीं था, देश पर एक महान शोक की लहर छा गई। हमारे प्रधान मंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी विदेश गये हुए थे। इस देश के और हमारे पड़ोसी देश के बीच शांति की स्थापना की चर्चा करने के लिये, वहां यकायक ११ जनवरी, को उनका देहान्त हो गया। श्री लाल-बहादुर जी के विषय में मुझे ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इसी उत्तर प्रदेश में उनकी सारी जिन्दगी गुजरी। १७ वर्ष की उम्र में ही वह स्वाधीनता के संग्राम में कूद पड़े थे और उनके जीवन के ९ वर्ष जेल में ही बीते। उन्होंने अपना जीवन अनेक कष्टों में बिताया। एक निर्धन परिवार में उनका जन्म हुआ और बहुत ही तकलीफ से उन्होंने अपनी शिक्षा प्राप्त की और जिन्दगी बसर की। सर्वेन्ट्स आफ इंडिया सोसा-इटी का मेम्बर होने के नाते उनके जीवन का एक आदर्शवादी तरीका था। वह समाज की सेवा करने की हर तरीके से कोशिश करते थे, सारा जीवन उन्होंने देश की सेवा में अन्त तक लगा दिया। कभी उन्होंने अपने निजी या परिवार के मुनाफे का खयाल नहीं किया। सन् १९३७ में वह इस सदन के मेम्बर बने और उसके बाद वह दोबारा सन् १९४६ में यहां के मेम्बर बने और वह सन् १९५१ तक यहां के लगातार मेम्बर रहे। पहले उन्होंने यहीं पर सभा सचिव का पद ग्रहण किया और फिर वह बाद में यहां के मंत्रिमंडल के सदस्य भी रहे। उसके बाद सन् १९५२ में वह यहां से राज्य सभा में गये और तभी से

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्रीमती सुचेता कृपालानी]

लगातार वह लोक सभा या राज्य सभा के मेम्बर बने रहे और उस दरम्यान में कई बार उन्होंने मंत्री पद सुशोभित किया। आप को याद होगा कि बीच में जब वह रेलवे मंत्री थे तो एक एक्सीडेन्ट के कारण उन्होंने उस पद से इस्तीफा दे दिया था। उसके बाद जब कामराज प्लान आया और उसमें बहुत से लोगों ने इस्तीफा दिया तो वह भी मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर अलग हो गये। लेकिन सन् १९६४ में प्रधान मंत्री पद के लिये उन्हें सब लोगों ने सर्वसम्मति से चुना।

श्री लालबहादुर शास्त्री जी के बारे में जब हम याद करते हैं और उनका वह सरल चेहरा याद पड़ता है तो नेत्र भर आते हैं, वह नम्रता से भरा हुआ उनका व्यक्तित्व, वह उनकी सच्ची भावना से और नम्रता से बातचीत करना। जब से उन्होंने प्रधान मंत्री का पद ग्रहण किया तो इतने ऊंचे पद पर रहते हुए भी और व्यस्त होते हुए भी वह जितना समय निकाल सकते थे वह हंसते हुए मिलते थे, नम्रतापूर्वक बातचीत करते थे। यद्यपि उनका स्वास्थ्य पहले से ही खराब था, २ बार उनको हृदय का दौरा हो चुका था, लेकिन वह अथक परिश्रम करते थे। उनको मेम्बर समझाते थे कि आप इतना ज्यादा परिश्रम न करें, लेकिन जिस काम को उन्होंने अपने कन्धों पर लिया था वह कठिन काम था। पं० जवाहर लाल जी के विशाल व्यक्तित्व के बाद जो कि १८ साल के अरसे तक यहां के एक महान नेता रहे और उस लम्बे अरसे में जो-जो समस्यायें सामने आईं वह उलझी हुई समस्यायें थीं, उनको सुलझाने का उन्होंने प्रयास किया और व्यावहारिक दृष्टि से एक-एक समस्या का समाधान निकाला। वह अपनी एक छाप देश पर छोड़ गये हैं। लड़ाई से हिन्दुस्तान को बचाने के लिये उन्होंने बहुत प्रयास किया, लेकिन जब वे लड़ाई से हिन्दुस्तान को न बचा सके उस समय उन्हें एक कठिन फैसला करना पड़ा और कहा कि कुछ भी हो हम लड़ाई में आगे बढ़ेंगे। यह फैसला आसान नहीं था। इसमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के साधनों का मुकाबला था। उनके पास अमरीकी आधुनिक शस्त्र थे जब कि हमें वे उपलब्ध नहीं थे। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान एक शांति पसन्द देश माना जाता है और डर यह था कि अगर हम लड़ाई का फैसला करते हैं तो दूसरे देशों में बहुत गलत प्रचार की सम्भावना थी। यह सब कुछ सोचकर भी लाल बहादुर शास्त्री जी ने समझा कि अब हमें इस चुनौती का मुकाबला करना चाहिए नहीं तो देश की रक्षा मुश्किल हो जायगी। बड़ा संगदिल करके उन्होंने यह फैसला किया। लड़ाई में जब हम कूद पड़े तब हमारे मन में सन्देह था कि लड़ाई में अत्यन्त कष्ट उठाने पड़ते हैं। हम घबरा रहे थे कि अन्तिम फैसला क्या होगा, लेकिन उनके नेतृत्व में इस चुनौती का मुकाबला किया गया। हमारे सिपाहियों और जो डिफेन्स के आफिसर्स हैं उनके सबके प्रति हम देश की तरफ से कृतज्ञता प्रकट करते हैं कि किस्म-किस्म के दुःख होने के बावजूद भी उन्होंने हिन्दुस्तान का सिर नीचे नहीं होने दिया। मैं तो स्वयं वहां पर गयी थी और मैंने स्वयं देखा कि हमारे सिपाही लड़ाई में किस किस भीषण शस्त्र के सामने डटे रहे और भारत का मस्तक ऊंचा करने के लिये उन्होंने अपनी जान का बलिदान दिया। इस सबका बहुत श्रेय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को ही जाता है। बाद में उन्होंने सोचा कि लड़ाई तो हो गयी पर अब प्रयास करना चाहिये कि शांति कैसे आये। शांति के अनुसन्धान में वे गये। वहां बातचीत होती रही और जिस दिन बातचीत समाप्त हुयी, उसी दिन उनके प्राण भी निकले। मेरा ऐसा मत है कि उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। उनका कहना था कि हम दोनों मित्र देश होकर एशिया में और दुनिया में अपने अस्तित्व को रख सकते हैं अगर हम आपस में लड़ते रहेंगे तो दोनों मिट जायेंगे। इसलिये उन्होंने शांति का प्रयास किया। आज हम व्यथित हृदय से इस अवसर पर प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति मिले और उनके दुखी परिवार तथा छोटे-छोटे बच्चों को भगवान शक्ति दे ताकि वे इस महान दुःख और कष्ट को सहन कर सकें। मैं अपनी ओर से और सदन की ओर से आपसे प्रार्थना करूंगी कि आप हमारी समवेदना उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

*श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह बड़ा संकट की घड़ी है। मैं समझता हूं कि यह बहुत बड़ा राष्ट्रीय संकट है, जिसकी चर्चा हम यहां पर कर रहे हैं। जो भावनायें माननीया मुख्य मंत्री जी ने लाल बहादुर शास्त्री के विषय में व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को, अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। उनका व्यक्तिगत जीवन तो मैं अपनी छोटी बुद्धि से नहीं समझ पाता लेकिन जिसने भी उनको देखा है यही पाया कि वे बाहर भी भारतीय थे और देश में भी भारतीय थे। उनका कहना था कि देश में रहेंगे, परदेश में रहेंगे, काहू भेष में रहेंगे, तऊ राऊ कहाई हैं। देखने में असली भारतीय प्रतीत होते थे। मैं उनके सम्पर्क में नहीं रहा, लेकिन इतना मुझे याद है और जो मैंने पढ़ा है तथा सज्जनों से सुना है उसके बाद उनके बारे में सुनने से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि महात्मा गांधी के जीवन का जो एक भारतीय जीवन का आदर्श था उस आदर्श में वह ढले और पले थे। सिम्पिल लिविंग और हाई थिंकिंग उनकी थी। मैं समझता हूं कि यह व्यक्ति ऐसा था, बिल्कुल उसी सांचे में ढला था और बड़ा सादा जीवन था। यही कारण था कि उन्होंने सारे समाज के सामने एक उदाहरण पेश किया कि कैसी ही स्थिति का व्यक्ति हो, कितना ही गरीब हो, कितने भी साधारण भाव का वह व्यक्ति क्यों न हो, यदि उसके हृदय में राष्ट्र भक्ति है, देश भक्ति है और उसका चरित्र उत्तम है तो उसके आधार पर वह कितना ऊंचा उठ सकता है। वह इतना बड़ा कार्यभार सम्भाल सकता है, प्रधान मंत्री हो सकता है, और वह प्रधान मंत्री हुए भी। यह आदर्श उन्होंने सारे समाज के लिये रखा। यह तो उनका व्यक्तिगत जीवन था।

दूसरी बात बिना कहे जी नहीं मानता कि सचमुच वह गरीब थे, गरीब के थे, गरीब में से थे, गरीब के लिये थे और वह गरीब ही मरे। ये सब बातें उनके व्यक्तिगत जीवन में थीं। एक-एक क्षण और उनके एक-एक कार्यों से यह चीज टपकती है।

जिस प्रकार का बाल्यावस्था का जीवन उनका बीता है जैसा कि मैंने अखबारों में पढ़ा है, कैसी गरीबी से वह रहे, सचमुच यह जीवन के लिये आदर्श है। कभी किसी को निराश नहीं होना चाहिये, मनुष्य किसी भी स्थान से ऊंचे से ऊंचे स्थान पर पहुंच सकता है।

दूसरा जीवन उनका जन नेता का था। मुझे जहां तक ध्यान आता है १८ वर्ष में जो समस्यायें रहीं, जो किसी ने १८ वर्ष में नहीं किया, वह उन्होंने १८ महीने में किया। कोई दूसरा ऐसा व्यक्ति मेरे सामने १८ वर्ष में नहीं आया। लगता था कि भारतीय आत्मा का साक्षात्कार कर रहा हूं। इन १८ महीनों में इतने राष्ट्रीय संकट आये, चाहे हिन्दी विरोधी आन्दोलन ले लिया जाय, चाहे भूख की समस्या ले ली जाय या पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न समस्या को ले लिया जाय जिस कुशलता के साथ उन्होंने इन सब को सम्भाला उसकी प्रशंसा किये बगैर कोई नहीं रह सकता। जब भी कोई संकट आया उस परिस्थिति में उन्होंने सदा दृढ़ निश्चय लिया। अन्य नेताओं के भी हमने भाषण सुने, वे जब भाषण देते हैं तो अपने व्यक्तित्व के बारे में पहले सोचते हैं और देश के बारे में बाद में सोचते हैं। यही एक ऐसे व्यक्ति थे जो पहले देश की सोचते थे तब अपने व्यक्तित्व को सोचते थे, अपने व्यक्तित्व को कभी नहीं सोचते थे। उसने सारी कौम, सारे समाज और देश के लिये पहले सोचा और जब हमारे ऐसे विचार करने वाले डगमगा जाते हैं, जब देश पर इतना बड़ा संकट आया, पाकिस्तान हमारे सामने खड़ा है, उसके बारे में निर्णय करते समय एक घड़ी कभी-कभी हिचक जाते हैं, ऐसे समय में उन्होंने जिस दृढ़ता का परिचय दिया वह सदा इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा। वह महान पुरुष थे। वह पत्थर और लोहे के समान कड़े थे और साथ ही पुष्प के समान कोमल भी थे। जब देश की प्रभुसत्ता पर आंच आयी तो उन्होंने दृढ़ता के साथ कदम उठाया और सारे देश को एक साथ लेकर आवाज उठायी कि फोर्स इज टुबी मेट विद फोर्स। क्योंकि

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी]

उन्होंने समझा कि केवल शांति की पुकार करने से ही हम ऐसे देश के साथ कोई मसला हल नहीं कर सकते। देश की आवश्यकता है कि इस वक्त हम कहें कि हम सब कुछ अर्पण कर देंगे देश की सार्वभौमिकता की रक्षा के लिये, देश की सीमाओं की रक्षा के लिये, इसको उन्होंने अच्छी तरह से समझा और उसके अनुसार दृढ़ता और मजबूती से कदम उठाया।

जिन हमारे सेना के बहादुरों के बारे में मुख्य मंत्री जी ने कहा, उनके प्रति हमारे हृदय में क्या भावनायें हैं उनको मैं फिर कहूंगा, लेकिन इतना अवश्य कहना चाहता हूं कि शास्त्री जी के कथनानुसार जब उन्होंने यह निश्चय कर लिया था अब या कभी नहीं और जब देश की रक्षा का प्रश्न आया तो उन्होंने (सेना से) अपने को पीछे नहीं रखा और १९६२ में जो ठेस हमारे गौरव, प्रतिभा, प्रतिष्ठा और मान को सारे विश्व में लगी थी उसको पुनः प्राप्त करने का श्रेय शास्त्री जी को है क्योंकि यदि ऊपर का शासन आज्ञा न देता तो मौके पर रहने वाले व्यक्ति अपना शौर्य न दिखा सकते। इसलिये जन नेता का जो काम स्वर्गीय शास्त्री जी ने किया उसकी मिसाल मिलना कठिन है।

जन नेता मैंने क्यों कहा? देश की आन्तरिक और वाह्य स्थितियों को संभालने के लिये एक नया नारा उन्होंने दिया। "जय जवान और जय किसान" को कहना आसान है, लेकिन इसमें मर्म क्या है? भारत का भाल किसने ऊंचा किया? वीर सैनिकों ने किया। सरकार से क्या कहूं कि उनके लिये कौन सी सुविधा दी जाय जो सारे जीवन को अर्पण करते हैं। उन्होंने जो "जय जवान" कहा वह इसलिये कहा कि १९६२ में खोये हुए सम्मान को फिर से भारत ने पाया। भारत उठा और निखरा। लेकिन वे जवान कैसे यह सब दिखा पाते अगर शास्त्री जी ने ऐसा करने का अवसर न दिया होता। "जय जवान" के बाद "जय किसान" भी हमने समझा। अमेरिका और दूसरे मुल्क हमको आंख दिखाते हैं और कहते हैं कि हमको वस्त्र व भोजन नहीं मिलेगा। तो वह मंत्र उन्होंने हमको दिया कि हमको हर विषय में आत्म-निर्भर होना चाहिये। वह जानते थे कि जब तक किसान की जय नहीं मनायेंगे तब तक मुल्क की हालत अच्छी नहीं हो सकेगी। इसलिये उन्होंने नारा दिया "जय जवान", "जय किसान" हम सोचते थे कि नेहरू जी के बाद क्या होगा? नेहरू जी गये और शास्त्री जी आये और उन्होंने नेहरू जी की कमी भुलवा दी। ऐसा लगता था कि नेहरू जी को हम भूलने लगे क्योंकि वह देश के लिये और हमारे कल्याण के लिये आगे बढ़ते रहे।

एक बात और कहूं जो प्रजातंत्र से संबंधित है। हमारे सामने विकट परिस्थिति रहती है। हम विरोधी दल के लोग चिल्लाते रह जाते हैं कि हमारी कोई बात सुनी नहीं जाती। एक लालसा और पिपासा रहती थी कि भले ही कोई हमारा विरोधी हो, लेकिन हमारा मार्गदर्शन करे। यह सच है कि प्रजातंत्र है, संविधान है, लेकिन कार्य रूप में परिणत किसने किया? दरअसल शास्त्री जी ने किया। १८ वर्ष के अन्दर अगर किसी ने प्रजातंत्र को अपने रक्त से सींचा तो स्वर्गीय शास्त्री जी ने सींचा। विदेश में इतने भारी निर्णय के लिये जा रहे थे, शांति की खोज में जा रहे थे, लेकिन उन्होंन विरोधियों को विश्वास में लिया। १८ वर्ष के इतिहास में मैं अगर भूलता नहीं हूं तो एक भी उदाहरण नहीं मिल सकता जहां सरकार ने विरोधियों को बुला कर उनको विश्वास में लिया हो और देश की रक्षा के सिलसिले में विचार विनिमय किया हो और यह उदाहरण भी केवल शास्त्री जी का है। इसको हम भूल नहीं सकते। सचमुच शास्त्री जी के जाने से भारत माता की गोद खाली हो गयी, लेकिन उसकी कोख खाली नहीं होगी, यह सत्य है, लेकिन ऐसा व्यक्ति कौन है जो विरोधियों का मार्गदर्शन करे, जो सामाजिक, व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय जीवन में निर्णय लेने के पहले विरोधियों को विश्वास में ले?

अभी माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि रेलवे मंत्री की हैसियत से उन्होंने इस्तीफा दे दिया। मुझे दूसरों के द्वारा यह मालूम हुआ कि वह इस प्रदेश के पुलिस मंत्री भी हुए थे और उस समय उनको कुछ निर्णयों में बड़ा साहस दिखाना पड़ा था और उसके बाद सेंटर

में रेलवे मंत्री हुए थे। कदाचित १९५६ की यह रेल दुर्घटना है जिसमें १५० आदमी मर गये थे। आलोचना की दृष्टि से मैं नहीं कह रहा, अन्य मंत्रियों की तरह से उन्होंने उसका आरोप इंजीनियर पर, पी० डब्ल्यू० डी० पर नहीं थोपा। सारा भार अपने ऊपर ले लिया और इस्तीफा देकर जो प्रजातंत्र की नींव थी उसको पक्का किया। उन्होंने कहा कि १५० आदमी की जान गयी उसके लिये वह व्यक्ति जिम्मेदार है जो उस विभाग को हैंडिल करता है। यह मामूली बात नहीं थी। जहां भी दृढ़ निश्चय लेना होता था वह लेते थे। केन्द्रीय मंत्रियों के बारे में भी, मैं नाम नहीं लूंगा, जब निर्णय लेने का अवसर आया तो उन्होंने कड़ा कदम उठाया जो प्रशासन तथा देश के कल्याण के लिये होता था। जब तक उन्होंने देश की बागडोर संभाली उन्होंने दृढ़ता से कदम उठाया और पीछे नहीं हटेंगे, यह निर्णय वह लेते थे। इसलिये मैं कहता हूं कि हमें उनसे बल मिला है और भगवान करे कि उनके मार्गदर्शन के द्वारा हमको बुद्धि मिले और चारों तरफ हमें अपने कदम रखने का अवसर मिले। जब कोई मर जाता है तो लोग उसकी चिन्ता करते हैं। इसलिये करते हैं कि वह तो गया और लौट कर फिर नहीं आयेगा। आज हम महात्मा गांधी जी का नाम क्यों लेते हैं? हम इसलिये उनका नाम लेते हैं कि हम महात्मा जी को किसी दल का नहीं समझते हैं। मैं समझता हूं कि ऐसे व्यक्ति, जिन्होंने समाज को कल्याणकारी मार्ग दिखाया है, उसका हमें अनुसरण करना चाहिये। उसके पीछे हमें चलना चाहिये। हम समझते हैं कि हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि वही होगी कि जो चीज वह हमारे सामने रख गये हैं उसके अनुसार हम कार्य करें और अपने आचार को उनके सांचे में ढालें। इतना कहने के बाद मैं कहना चाहता हूं कि हमें उनके चले जाने से दुख तो है ही, उनकी वृद्धा माता हैं, उनकी पत्नी हैं, मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करूंगा कि मेरी और इधर के बैठने वालों की समवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री रामसुन्दर पाण्डेय (जिला आजमगढ़)—

माननीय उपाध्यक्ष जी, स्वर्गीय प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री जी के संबंध में जो उद्गार माननीय नेता सदन और विरोधी दल के नेता ने प्रकट किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। वास्तव में सबसे ज्यादा तकलीफ देह बात हम लोगों को और परिवार वालों को यह है कि उनकी मृत्यु अचानक और असामयिक विदेश में हुई। अखबारों में हमें पढ़ने को मिला कि जिस घर में वे सोते थे, डाक्टर लोग और उनके सहायक उसके दूसरे कमरे में सोते थे। जब उनकी खांसी का जोर बढ़ा तो उनके पास घंटी भी नहीं थी जिससे वे किसी को अपने पास बुला सकें। अखबारों में यह पढ़ने से हमें ऐसा महसूस हुआ कि जहां लाखों और करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं वहां इतना छोटा सा साधन भी उनको नहीं दिया जा सका जो हमारे लिये इतने बड़े दुख का साधन बना। मैं अधिक न कह कर यह निवेदन करना चाहता हूं कि उनके परिवार वालों को शान्ति मिले और सहनशक्ति मिले और इसके साथ ही साथ देश के लोगों को भी साहस मिले कि वह इसको बर्दाश्त कर सकें। ताशकंद समझौते के संबंध में हमें ऐसा लगता है कि उससे उनके विचारों पर असर पड़ा और उसके असर से ही उनकी इस प्रकार की मृत्यु हुई। मैं चाहता हूं कि आप हमारे दल की उनके परिवार वालों तक समवेदना पहुंचा दें।

***श्री जेड० ए० अहमद (जिला आजमगढ़)—**

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ से स्वर्गीय शास्त्री जी के गम पर अकीदत और मुहब्बत के फूल पेश करना चाहता हूं। वैसे तो जो इस दुनिया में पैदा हुआ है वह कभी न कभी जायेगा ही और उसके जाने के बाद किसी न किसी को गम होगा ही, लेकिन जब ऐसी हस्ती चली जाती है जिसके लिये मातम सारी इंसानियत को है तो उसके चले जाने के बाद गम की कैफियत ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय गम की कैफियत हो जाती है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री जेड० ए० अहमद]

शास्त्री जी के बारे में जो कहा जाय वह कम है। उनके सिफात और गुणों के बारे में माननीया मुख्य मंत्री और माननीय विरोधी दल के नेता ने जो कहा और दूसरे देशों ने भी जो कहा है उस में दो रायें नहीं हो सकती हैं। मुझे फख्र हासिल था कि मैं उनके साथ रहा, मैं उनके साथ कामरेड के तौर पर वर्षों रहा, कांग्रेस के वालंटीयर की हैसियत से उनके साथ और जेल में उनके साथ रहा। पी० सी० सी० का सेक्रेटरी उनके साथ रहा। मैं आज अगर तारीफ करता हूं तो महज जिस तरह से शोक सभा में जाब्ते से तारीफ की जाती है, उस तरह नहीं, बल्कि दिल से महसूस करता हूं, वह एक बुलन्द इंसान थे। वह ऊंचे उठे, उन्हें किसी ने ऊंचे उठाया नहीं, खुद ऊंचे उठे। बहुत से लोग बड़े बड़े खानदानों में पैदा होते हैं, बड़े-बड़े पदों पर पहुंच जाते हैं। वह एक गरीब घर में पैदा हुए। अपनी मेहनत, अपनी ईमानदारी से, अपनी जांफिशानी से, चलते-चलते हिन्दुस्तान के महान् रहनुमा बन गये। इसलिये सिफात का जहां तक ताल्लुक है, बहुत कम लोग इतने ईसार से, इतनी मेहनत से, इतनी ईमानदारी से काम करेंगे। छोटी-छोटी बातों से बड़प्पन मालूम होता था। जेल में थे। अपने कपड़े धोना और दूसरे के भी कपड़े धो देना। एक बुड्ढे थे। उनसे कहते थे कि तुम कपड़े न धोओ, मैं धो दूंगा। हर एक से मुहब्बत के साथ मिलते थे। छोटी ही बात है। एक दफा मैं, जब वह होम मिनिस्टर थे, मैं दिल्ली में सड़क पर टहलता हुआ चला जा रहा था। उसी रास्ते से उनकी गाड़ी गुजरी। उन्होंने गाड़ी रोक ली और कहा बैठो, कहां जाते हो? यह छोटी सी बात है, लेकिन इसका परमानेन्ट असर मेरे दिल पर हो गया। यह इंसान है, होम मिनिस्टर, प्राइम मिनिस्टर नहीं है। अगर बुलन्द इंसान नहीं है तो मिनिस्टर किसी काबिल नहीं है। मैं एक तरफ जहां उस हस्ती की बुलन्दी को देखता हूं, उसकी सिफात को देखता हूं, दूसरी तरफ मैं यह भी देखता हूं कि उनकी कितनी बड़ी देन हमारी कौमी जिन्दगी को है। उसको हमें साफ तौर से देखना और पकड़ना चाहिये।

तीन संकट की घड़ियां आयीं। हर संकट की घड़ी पर जो डेढ़ साल के अन्दर आयी, शास्त्री जी ने राष्ट्र को संभाला। पहली संकट की घड़ी तब आयी, जब पंडित जवाहर-लाल नेहरू के सक्सेसर का सवाल था। कौन आयेगा, खतरा मालूम होता था। कोई चमकता हुआ सितारा नहीं दिखायी देता था। उसके बाद शास्त्री जी आये। लोग कहते थे कि क्या संभाल पायेंगे, लेकिन चन्द महीनों में ही उन्होंने बता दिया कि कितने शानदार तरीके से संभाल सकते हैं। इसके बाद दूसरी संकट की घड़ी आयी, जब पाकिस्तान ने आक्रमण किया। उस वक्त घबराहट थी, फौज क्या करे, लीडरशिप नातजुरबेकार है। लेकिन उन्होंने बड़ी मजबूती के साथ रहनुमाई की। उन्होंने मजबूती के साथ डटकर आक्रमणकारियों का जबाब दिया। उन्होंने कहा कि फोर्स को फोर्स से मीट किया जायगा। उनकी सही नीति की वजह से फौजें आगे बढ़ी और जाकर उन्होंने आक्रमणकारी का मुंहतोड़ जबाब दिया। लेकिन जब हमारी फौजें आक्रमण कारियों को पीछे, हटा रही थीं तो लालबहादुर जी कह रहे थे कि हम आक्रमणकारी नहीं हैं। हम शान्ति चाहते हैं, हम बइज्जत सुलह चाहते हैं। हम किसी पर आक्रमण करना नहीं चाहते। हमारी कौमी पालिसी आक्रमणकारी की नहीं है, हमारी पालिसी अमनपसन्दी की है। देश की जड़ें सिद्धान्तों में होती हैं, जो सिद्धान्तों के बाग में फलता फूलता है, वह सिद्धान्तों को नहीं भूलता। जब मौका आया अमन की तरफ कदम उठाने का, तो शास्त्री जी लपक कर आगे बढ़े। ताशकन्द का समझौता मामूली समझौता नहीं है। इस समझौते के पीछे हमारी बुनियादी राष्ट्रीय परम्परा दिखायी देती है। मैं कहता हूं कि जो काम लाल बहादुर ने किया उसके पीछे महात्मा गांधी की आत्मा है, जो काम उन्होंने ताशकन्द समझौते के पीछे कर दिखाया। क्योंकि यह दो दोस्त, दो पड़ोसी देश और दो बिरादर देश कब तक लड़ते रहेंगे और इस लड़ाई का अन्जाम क्या होगा? इस लड़ाई का नतीजा उस ६० करोड़ गरीब जनता के लिये क्या होगा, जो भूखी और नंगी है? जिसे विकास और डेवलपमेन्ट की आवश्यकता है? इसलिये यह पैगाम लेकर ही वह ताशकन्द पहुंचे और आप देखें

कि वह जब ताशकन्द में बोले तो क्या बोले ? उन्होंने इसी जरूरत का वहां पर इजहार किया, उन्होंने कहा—

"A heavy responsibility lies on our shoulders. The sub-continent has a population of 600 million people- one fifth of the human race. If India and Pakistan have to progress and prosper, they must learn to live in peace. If there is constant conflict and hostility, our peoples would suffer greater hardships. Instead of fighting each other, let us start fighting poverty, disease and ignorance. The problems, the hopes and the aspirtions of the common people of both the countries are the same. They want not conflict and war, but peace and progress."

तो देखिये यह है वह अन्डरस्टैन्डिंग जिसके मातहत आज वहां पर समझौता हुआ है। यह समझौता सिर्फ पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का समझौता नहीं है, यह वह राष्ट्रीय तरीका है जिसे न केवल हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को अपनाना चाहिये, बल्कि सारी दुनिया को अपनाना चाहिये। यदि वह शांति से और अमन से रहते हुये अपनी और अपने मुल्क की तरक्की करना चाहते हैं और इंसानियत का दर्जा ऊंचा करना चाहते हैं। अपने इन महान कार्यों के लिये लालबहादुर शास्त्री जी हमेशा तवारीख में जिन्दा रहेंगे, क्योंकि उन्होंने मानवता को वह तरीका दिखाया है जो सदा याद किया जाएगा और जिसका लाभ सभी दुनिया के लोग हासिल करेंगे। मैं अधिक कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि गम है। लेकिन साथ ही एक खुशी है कि वह जिस ऐक्टिव काम के लिये जिन्दा रहे, जिस चीज की दुनिया को जरूरत थी, उस मिशन को पूरा करके वह दुनिया से चले गये, जिस मिशन को महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और जनता ने चाहा था। मुल्क को बढ़ाओ, अमन रखो, आपस में झगड़े न हों। इन सारे बुनियादी वसूलों को पूरा करते हुये वह हमारे बीच से चले गये। वह कीमती सितारा चोटी पर चमका और फिर हमारे बीच से चला गया किन्तु उसकी रोशनी हमारे सामने बनी रहेगी और उसकी रोशनी में हम अपना मार्ग खोजते रहेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं अपने गम का इजहार करता हूं और दरख्वास्त करूंगा कि इस गम के एहसास को उनके खानदान तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैं स्वतंत्र पार्टी की ओर से, नेता सदन द्वारा जो शोक तथा समवेदना का प्रस्तुत प्रस्ताव है, उससे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। यह मैं एक देश का बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं कि जिस प्रधान मंत्री ने केवल १८ महीनों के अन्दर इस देश में आशा, विश्वास और साहस की अभूतपूर्व ज्योति जगाई थी, वह अब हमारे बीच में नहीं रहा।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे यह सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ कि मैं उनके अधिक निकट सम्पर्क में आता, लेकिन एक बार मुझे दो दिनों तक उनके साथ रहने का सुअवसर अवश्य मिला था। स्वर्गीय राजा मनकापुर के साथ मैं दिल्ली गया था तो हम लोग उनकी कोठी में ही ठहरे थे। जिस समय राजा साहब ने उनसे हमारा परिचय कराया, उस समय वह अपनी कुर्सी से उठ कर हाथ मिलाने के लिये हमारी ओर बढ़े, जिस सौजन्यता और विनम्रता से इतने उच्च पद पर आसीन लाल बहादुर शास्त्री जी एक साधारण आदमी से हाथ मिलाने मेरी ओर बढ़े, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता हूं। उस घटना की छाप मेरे जीवन पर सदा बनी रहेगी। उस समय वह यद्यपि प्रधान मंत्री नहीं थे, लेकिन केन्द्र के एक वरिष्ठ मंत्री थे और उनकी सौजन्यता और सौम्यता की छाप हमारे दिल पर है। बड़े होकर भी छोटों के प्रति इतनी सौजन्यता का वर्ताव जो व्यक्ति कर सकता है, तो उसकी जीती जागती तस्वीर हमारे लालबहादुर शास्त्री थे। दो दिनों तक हम शास्त्री जी की कोठी पर उनके बीच रहे, तो मुझे

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री भानुप्रतापसिंह]

याद है सुबह-शाम आकर वह हमारे भोजन के बारे में, हमारी सुख-सुविधा के बारे में बराबर पूछते रहते थे। मैं सोचता हूं कि छोटे-छोटे कामों में जो इतना लगनशील हो सकता है, वह अपने बड़े-बड़े कामों में कितना कर्त्तव्य परायण होगा उसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है। उनके जीवन से हमको काफी प्रेरणा मिलती है। छोटा सा आदमी, छोटी सी शुरूआत, मगर काम १८ महीनों के अन्दर इतने बड़े-बड़े किये कि उनके निधन पर अमेरिका के प्रेसीडेन्ट जानसन ने यह कहा कि आज यह दुनिया लालबहादुर शास्त्री के निधन से छोटी हो गयी है। जिसको हम छोटा सा व्यक्ति समझते थे उसके चले जाने से दुनिया छोटी हो गयी, ऐसा प्रेसीडेन्ट जानसन ने कहा।

श्रीमन्, आपको मालूम है कि इस देश में तरह-तरह की राजनीतिक विचारधारायें हैं, परन्तु यदि इन विचार धाराओं का कोई समन्वय सम्भव है तो वह समन्वय लालबहादुर शास्त्री ने करने का प्रयत्न किया और उनको उसमें बहुत हद तक सफलता भी मिली। जैसा नेता विरोधी दल ने कहा कि उन्होंने सभी का विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न किया और उसमें उन्हें सफलता भी मिली। यह बात संभवतः अभी समाचार-पत्रों में नहीं आयी है, लेकिन ताशकन्द समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद और देहान्त होने के चन्द घंटे पहले उन्होंने हमारे दल के नेता राजगोपालाचारी जी को एक पत्र लिखा। वह पत्र अब उनके सेक्रेटरी ने राजा जी को भेजा है। इससे पता चलता है कि किस प्रकार से वे इस देश की विभिन्न विचारधाराओं को समन्वय करना चाहते थे और उसमें उनको सफलता भी मिली थी। ऐसे नेता के निधन से देश की कितनी क्षति हुई है उसका अनुमान लगाना ही कठिन है। कुछ शंकायें ताशकन्द समझौते के विषय में की जाती हैं, लेकिन जैसा माननीय डाक्टर अहमद ने कहा कि राष्ट्रों के कुछ सिद्धान्त होते हैं और उन सिद्धान्तों के लिये हमको अगर कुछ त्याग और बलिदान करना भी आवश्यक हो तो उनको बनाये रखने के लिये हमें वह त्याग और बलिदान निसंकोच करने का प्रयत्न करना चाहिये। जो लोग उस समझौते की आलोचना करना चाहते हैं, या करते हैं उनको यह भी समझना चाहिये कि इस समय क्या कर्तव्य है। तर्क यह दिया जाता है कि इतना बलिदान किया गया, इतने लोग मारे गये, इतनी क्षति हुई, क्या यह इसीलिये हुई थी? परन्तु मैं उनसे इतना ही कहना चाहता हूं कि यदि किसी प्रकार का समझौता न हो और यदि ६ सौ मिलियन जनता में एक ऐसा युद्ध चले जो पचासों वर्षों तक चलता रहे तो कितनी क्षति होगी। क्या इसका उन्होंने कभी विचार किया है? जो कुछ भी शास्त्री जी ने किया वह इस देश की परम्पराओं के अनुकूल किया। उन्होंने अपनी सौजन्यता, सरलता का तो परिचय दिया ही था, पिछले कुछ महीनों में अपनी दृढ़ता का भी परिचय दिया था, लेकिन अब उसी के साथ जो अपनी शान्ति प्रियता का परिचय दिया वह अद्वितीय है। इन शब्दों के साथ मैं अपने दल की ओर से उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आप से निवेदन करता हूं कि हमारे समवेदना के शब्दों को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)—

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आदरणीय नेता सदन ने आदरणीय शास्त्री जी के सम्बन्ध में जो भावनाएं व विचार व्यक्त किये हैं और जो शोक एवं समवेदना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है अपनी ओर से और अपने दल की ओर से मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, संसार में महान पुरुष आते हैं और विशेष महान कार्य करने के लिये आते हैं और जब उनका यश अपने उच्च शिखर पर पहुंच जाता है वह संसार को छोड़कर चले जाते हैं। शास्त्री जी उन्हीं महान पुरुषों में थे। जिस प्रकार गांधी जी आये, देश को आजाद कराने के बाद चले गये, पटेल साहब आये और रियासतों का एकीकरण करके चले गये, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस आये और देश की आजादी के लिये आई० एन० ए० आर्गनाइज किया, देश की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी, उनका मान सम्मान ऊंचा हुआ और चले गये, रफी अहमद साहब फूड की समस्या को हल करके चल बसे, जवाहर लाल नेहरू जी ने को एक्जिस्टेन्स और नान-

एलाइनमेंट पालिसी को देकर, साथ ही समाज को समाजवाद की तरफ एक मोड़ दे कर चले गये, यह सब इस संसार को छोड़कर चले गये, लेकिन अमर हो गये इतिहास में। शास्त्री जी भी इस संसार से चले गये, लेकिन इतिहास में वे सदैव अमर रहेंगे। मान्यवर, वे एक बड़े कार्य के लिये आये थे और उसको पूरा किया। उन्होंने संसार में शान्ति की स्थापना के लिये अपने प्राणों का बलिदान किया। ताशकन्द घोषणा और विश्वशान्ति के लिये इस महान कार्य के लिये इतना महान बलिदान उन्होंने किया। उस कार्य को कौन सम्पन्न करता? कौन ताशकंन्द घोषणा के लिये इतना बड़ा बलिदान देता और कौन उसको पूरा करता? यह शास्त्री जी जैसी महान विभूति का ही काम था। लड़ाई लड़ी, डटकर पाकिस्तानी आक्रमण का सामना किया तो विश्व को यह भी दिखा दिया कि वे लड़ भी सकते हैं और शान्ति के लिये प्राण भी गवां दिये।

मान्यवर, शास्त्री जी इस सदन में उस स्थान पर बैठते थे जिस स्थान पर आज नेगी जी बैठते हैं। मेरा उनसे व्यक्तिगत बहुत परिचय था। यहां पर १९४८–४९ में जब पुलिस और विद्यार्थियों में संघर्ष हुआ तो उन्होंने उस समय मुझे बुलाया था। उस समय मैं लखनऊ विश्व-विद्यालय की यूनियन का प्रेसीडेन्ट था। उन्होंने बुलाकर मुझ से यह कहा कि मैं जानता हूं कि विद्यार्थियों के ऊपर पुलिस ने गलत लाठी चार्ज किया है। छात्रों की स्ट्राइक जारी रहनी चाहिये और तुम अपनी मांग पर अड़े रहो और उन्होंने शीघ्र ही पुलिस के खिलाफ इंक्वायरी कमीशन की नियुक्ति की थी और पुलिस अधिकारियों को उन्होंने सजा दी थी।

इतना ही नहीं, मैं एक घटना आपको और बताऊं। मैं दिल्ली उनसे मिलने के लिये गया और उन्होंने मुझको मिलने के लिये साढ़े आठ बजे का समय दिया। वह मेरे जाने के १० मिनट पहले कहीं चले गये। मुझे जब वहां जाने पर मालुम हुआ कि वह १० मिनट पहले कहीं चले गये तो मैंने उनके प्राइवेट सेक्रेटरी से कहा कि तुमने मुझको फोन क्यों नहीं किया मैं नहीं आता। वह १० मिनट के बाद आ गये और आकर उन्होंने मुझसे कहा कि विरोधी दल के नेता, मैं तुम्हारी वजह से आया हूं। कितने बड़प्पन की यह बात है मेरे लिये, वह लौट कर वापस आये और इस बात को उन्होंने याद रखा कि मैंने उनसे समय लिया हुआ है। जैसा डाक्टर अहमद साहब ने बताया वह अपनी जिम्मेदारी को समझते थे। हमारी ही नहीं यह अन्तर्राष्ट्रीय महान क्षति हुई है यह बहुत अफसोस की बात है। जितने भी हमारे आजादी के सेनानी हैं वह एक-एक करके पके आम की तरह रोज चले जाते हैं, लेकिन उनका नाम इतिहास में अमर है और दुनिया में शास्त्री जी का नाम इतिहास में जिन्दा रहेगा। शास्त्री जी अपनी हाईस्ट ग्लोरी में स्वर्गधाम सिधारे यानी उनका यश उच्च शिखर पर था उस समय इस संसार को छोड़ा अतः वे अमर हो गये। मैं एक बार फिर आपसे अपनी ओर से और अपने दल की ओर से प्रार्थना करूंगा कि उनके परिवार तक हमारी ये भावनायें और समवेदना पहुंचाने की कृपा करें और उनकी याद को हम और अधिक स्थायी बना सकेंगे यदि ताशकन्द घोषणा को सही रूप में कार्यान्वित कर सकें। यही हमारी सबसे बड़ी श्रृद्धांजलि उनके प्रति होगी कि ताशकन्द घोषणा को लेकर और स्प्रिट में अमल करें।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)—

मान्यवर, मैं अपनी सोशलिस्ट पार्टी को अभी माननीय नेताओं ने जो विचार शास्त्री जी के सम्बन्ध में व्यक्त किये हैं, उनसे सम्बद्ध करता हूं। अभी जिस प्रकार से यहां पर डा० अहमद साहब ने बतलाया शास्त्री जी ने हमारे समाज के सामने ऐसा एक उदाहरण उपस्थित किया कि एक छोटा आदमी, गरीब परिवार का आदमी, साधारण आदमी असाधारण आदमी बन सकता है। लाल बहादुर शास्त्री जी ने अपनी जिन्दगी को किस प्रकार उठाया और किस प्रकार वे दुनिया पर छा गये अपनी उस विचार धारा से यह आज सारी दुनिया के सामने विदित हो गया है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री बलवानसिंह]

जिस तरह से हमारे साथी ने कहा कि आज दुनियां उनके न रहने से छोटी हो गयी है। श्रीमन्, पुराने प्रधान मंत्री यहां पर १८ साल तक रहे। उन्होंने भी बहुत से काम किये लेकिन किसी प्रधान मंत्री या मंत्री के समय में कार्यकाल की बात नहीं होती बल्कि उस प्रधान मंत्री ने या मंत्री ने अपने कार्यकाल में मानव जीवन के लिये कितना काम किया यह असल बात होती है। यह इतिहास जानता है कि इस १८ महीने के कार्यकाल में लाल बहादुर जी शास्त्री ने वह कार्य करके दिखाया है जो कार्य कैनेडी ने अमेरिका में करके दिखाया था। इन १८ महीने के अन्दर हिन्दुस्तान के अन्दर हिम्मत आई और जोश आया और हिन्दुस्तान के अन्दर इस बात का एहसास हुआ कि आज दुनिया की कोई ताकत भी अगर हिन्दुस्तान की तरफ आये तो यह मुल्क उस ताकत का मुकाबला पूरी ताकत से करने के लिये तैयार है। यह सबसे बड़ी देन इस देश को लाल बहादुर जी शास्त्री ने दी थी। जिस तरह से लाल बहादुर जी शास्त्री ने अपना परिचय दिया उस से यह जाहिर होता है कि हिन्दुस्तान का साधारण से साधारण आदमी हिन्दुस्तान की सड़कों पर चलने वाला आदमी भी हिन्दुस्तान का प्रधान मंत्री बन सकता है। एक गरीब परिवार का आदमी, जिसके पास दो पैसे भी न हों, पढ़ने के समय में, वह अपनी ईमानदारी से उठता हुआ चला जाय, इस तरह का ऊंचा ईमानदारी का करेक्टर इतिहास के अन्दर नहीं है उसके लिये हम आज अपनी श्रद्धांजलि पेश कर रहे हैं।

मुझे याद है जब पाकिस्तान के आक्रमण के समय कुछ मुल्कों ने, इंडोनेशिया, ईरान और ब्रिटेन ने हमारे मुल्क के साथ साजिश की थी। उस समय हमारे मुल्क के पास अनाज भी नहीं था। चारों तरफ से अन्न का संकट देश के सामने था। उस समय लाल बहादुर जी शास्त्री ने कहा कि हम किसी भी रिस्क के लिये तैयार हैं। यह एक बहुत बड़ी बुलन्द चीज थी। जोखिम लेना एक महान नेता का काम होता है। आज वह बड़ी शान्ति के साथ अपने मुल्क को एक शान्ति के रास्ते पर लाये। ताशकन्द में जो कुछ हुआ, उन चीजों में मैं नहीं जाऊंगा और उसका क्या परिणाम हुआ इसके विवरण में भी पड़ूंगा नहीं, लेकिन दो मुल्क, जो बराबर के मुल्क थे, और उनमें जब हमारे मुल्क की फौजें पाकिस्तान में थीं, उसकी जमीन पर थीं, हिन्दुस्तान का झंडा ऊंचा था, लालबहादुर शास्त्री ने दिखा दिया कि हिन्दुस्तान की ताकत कितनी है और उसी बुनियाद पर अमेरिका और रूस ने माना कि हिन्दुस्तान मामूली मुल्क नहीं है, लेकिन उस समय भी लालबहादुर शास्त्री शान्ति का पैगाम ले कर खुद ताशकन्द गये। विजेता थे, फातेहा थे, लेकिन उस मुल्क से सुलह करने जाते हैं कि जो मुल्क नफरत की बुनियाद पर खड़ा है। उसके लिये एक विजेता का सुलह का पैगाम ले कर जाना उनकी महानता की निशानी थी।

श्रीमन्, हम जो उनके अन्दर जोश था, जो सामञ्जस्य था उसको ले कर चलें। हिन्दुस्तान में बिग थिंकिंग, ऊंचे विचार की कमी है। बिग थिंकिंग एक ऐसे मामूली इन्सान के अन्दर आयी, जिसके पास, जैसा कि डाक्टर साहब ने कहा, कोई दौलत नहीं थी, उसके पीछे कोई इतिहास नहीं था। वह एक मामूली इंसान की थिंकिंग थी, और उसी चीज ने उनको प्रधान मंत्री बनाया। मैं यह मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि अगर किसी के ऊंचे विचार न हों तो वह किसी बड़े प्रजातांत्रिक देश का प्रधान मंत्री बन सकता है। तो ऐसे विचार हिन्दुस्तान के अन्दर आये शास्त्री जी के कारण।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी पार्टी की तरफ से शास्त्री जी की दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी भावनायें आप उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री खेमचन्द (जिला आगरा)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन ने स्वर्गीय प्रधान मंत्री के निधन के सम्बन्ध में जो शोक प्रस्ताव रखा है एवं अन्य नेताओं ने जो उनके सम्बन्ध में अपने भाव व्यक्त किये हैं उनसे अपने आपको और अपने दल को मैं सम्बद्ध करता हूं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मान्यवर, धम्मपद में एक बात आती है कि चमेली की सुगन्धि हमेशा वायु के साथ बहा करती है, किन्तु महापुरुषों के कार्य की सुगंधि इतनी उत्तम होती है कि वायु के विपरीत भी वह बहती है और इसका उदाहरण शास्त्री जी के आचरण में उस समय मिलता है जबकि उनके बिलकुल ही समकक्ष चुनौती पर चुनौती देने वाले पाकिस्तान के सदर अयूब साहब उनसे मुलाकात करते हैं और उनसे हुई मुलाकात का अपने पर जो प्रभाव हुआ उसे व्यक्त करते हैं। उससे हमें जाहिर होता है कि महापुरुषों के कार्य हवा के रुख के विपरीत भी अपना प्रभाव डालते हैं। संसार के हर भाग से जिस प्रकार से उनके प्रति श्रद्धा के भाव व्यक्त किये गये, उनके आदर्शों को जितना दोहराया गया, सम्भवतः इतना प्रभावशाली स्वरूप बहुत कम देखने में मिलता है।

शास्त्री जी का जो आदर्श प्रेम था और उनकी जो निष्ठा थी, उसका एक परिणाम था कि आज वह देश के जन-जन के हृदय में, संसार के जन मन में व्यापक रूप से अपना प्रभाव छोड़कर गये हैं और यह निश्चित बात है कि जिन परम्पराओं को मान्यता देते हुये स्वर्गीय शास्त्री जी ने अपना आदर्श छोड़ा है, उन्हीं परम्पराओं पर, उन्हीं विश्वासों पर, उन्हीं धारणाओं और उसी निष्ठा के बल पर अगर हम आगे बढ़ते हैं तो हमारे राष्ट्र की प्रगति कभी भी रुक नहीं सकती है। इसे कोई भी छोटा नहीं कर सकता है और इन सब बातों को सोचते हुये मैं समझता हूं कि महापुरुषों के यश को जितना कहा जाय उतना थोड़ा है और जितना समझ लिया जाय उतना ही बहुत होता है। इन भावनाओं के साथ मैं अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आप से निवेदन करता हूं कि हमारे और हमारे दल की समवेदनायें संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री उपाध्यक्ष—

नेता सदन और विभिन्न दल के नेताओं ने जो उद्गार प्रकट किये हैं मैं उन सबसे अपने को संबद्ध करता हूं। शास्त्री जी के निधन से जो देश, प्रदेश और दुनिया को क्षति हुई है उसका पूरा होना निकट भविष्य में सम्भव नहीं मालूम होता है। मैं भी अपने को बड़ा सौभाग्यशाली समझता हूं कि श्री शास्त्री जी के साथ सन् १९३७ से अब तक मिलने जुलने और कार्य करने का मौका मिला। वह सन् ३७ में पहले पहल इस सदन के सदस्य चुने गये। फिर सन् ४६ में भी और उसके बाद तो बड़ा लम्बा इतिहास है उसको बताने की जरूरत मैं नहीं समझता। मुझे सिर्फ यह कहना है कि शास्त्री जी ने जो-जो अपने जीवन से हमको उपदेश दिये हैं, जो अपने कार्य से हमारे सामने एक आदर्श उपस्थित किया है उसे हमको अपनाना है। सबसे बड़ी बात मैं यह देखता हूं कि उन्होंने जो सादा जीवन और उच्च विचार का एक आदर्श उपस्थित किया वह हमारे लिये अवश्य अनुकरणीय है। जब प्रधान मंत्री हुये और इंगलैंन्ड जाने की बात आई तो उन्होंने कहा कि मैं अपनी धोती में ही वहां जाऊंगा। वह बिल्कुल सादा लिवास में रहते थे और कोई नहीं कहता था कि यह इतना महान् और बड़ा व्यक्ति है।

मुझे एक बात बार-बार याद आती है कि जब वह यहां सभा सचिव हुये तो एक दिन शाम के वक्त मेरे यहां बिला इत्तला के पहुंच गये। मैंने उनके स्वागत की तैयारी तो की नहीं थी जैसे मैं रहता था वैसे ही मैंने उनको ठहरा लिया। दो दिन तक वह ठहरे। मुझे नहीं मालुम हुआ कि मैं किसी मेहमान की मेहमानदारी कर रहा हूं। वह भी घर के सदस्य की भांति रहे। तो एक सबक तो यह सादा जीवन और उच्च विचार का है। दूसरा यह है कि उन्होंने बराबर यह दिखा दिया दुनियां को कि छोटी से छोटी जगह में पैदा हो कर इंसान कितना बड़े से बड़ा हो सकता है। इससे भी हमारे मुल्क के लोगों को उन्होंने एक अपूर्व साहस दिया है कि सेवा करने से छोटे लोग भी बढ़ सकते हैं।

तीसरी बात यह है कि जिस काम में वह जुटते थे उसको पूरी लगन के साथ करते थे और मेहनत, ईमानदारी और सच्चाई से अगर कोई किसी काम को करता है तो उसकी सराहना होती है और वह भी ऊंचा उठने में सफल हो जाता है। तो ये सब बातें वे छोड़ गये हैं। अगर उनको हम अपनायेंगे तो वाकई में वह श्रद्धांजलि होगी।

[श्री उपाध्यक्ष]

यों तो अपने कामों से उन्होंने सारे देश का आदर पाया है, लेकिन पिछले १८ महीने में जो कार्य उन्होंने किया वह अद्भुत है। देश के सामने बड़ी-बड़ी समस्यायें थीं। खास तौर से जब पाकिस्तान का हमला हो गया तब उन्होंने किस साहस का परिचय दिया, लड़ाई को चलाया और विजय प्राप्त हुई जिससे सारी दुनिया में भारतवर्ष का सर ऊंचा हो गया फिर से जो कि थोड़ा सा नीचा हो गया था और दुनियां में भारत के प्रति इतना सम्मान पैदा हो गया जितना पहले नहीं था। एक बात और कहना चाहता हूं। ताशकन्द में जो समझौता हुआ वह भारत की परम्परा के मुताबिक हुआ। गांधी जी की जो नीति थी शान्ति की उसी को उन्होंने बहुत आगे बढ़ाया। आखिरकार हिन्दुस्तान और पाकिस्तान एक ही मुल्क के दो टुकड़े हैं। अगर दोनों ही आपस में लड़ते रहेंगे तो वह बरबादी की ही बात थी। हम सभी जानते हैं कि शुरू से ही पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में जो कशमकश चली आ रही थी वह कम नहीं हो रही थी। यही एक ऐसा मौका आया था जब कि पाकिस्तान कुछ दबा उसकी पराजय हुई और रूस ने कोशिश करके दोनों में एक समझौता कराया और यह समझौता हुआ। मैं ताशकन्द समझौते को एक बहुत बड़ा समझौता समझता हूं। अब फिर से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अन्दर मेल-मिलाप की शुरुआत होगी। मेरा विश्वास है कि पाकिस्तान भी अब उसके खिलाफ नहीं जायेगा। हमारे यहां तो ऐसी परम्परा ही चली आ रही है कि 'प्राण जायं पर वचन न जाई'। प्राण भले ही चले जायं पर वचनों का पालन हो। मैं समझता हूं कि इस समझौते से दोनों देशों का भला होगा।

शास्त्री जी की बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें हम वर्षों तक याद रखेंगे। इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा। अपने जीवन में जो कुछ भी उन्होंने किया वह देश की भलाई के लिये ही किया। यूं तो सभी मरते हैं, कोई अमर नहीं हैं मगर शास्त्री जी की जो मौत हुई है वह ऋषियों मुनियों जैसी है, देश के हित में कार्य करते हुये उन्होंने अपना शरीर छोड़ा उनको न कोई कष्ट हुआ और न कोई और बात हुई। इन्हीं सब बातों के कारण शास्त्री जी दुनियां में अमर रहेंगे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और सदन में जो विचार माननीय नेता सदन और अन्य दलों के नेताओं ने प्रकट किये हैं उन सभी को मैं उनके शोक संतप्त परिवार को भेज दूंगा।

अब हम दो मिनट मौन खड़े होकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट के लिये खड़े हुये।)

डाक्टर एच० जे० भाभा के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)—

उपाध्यक्ष जी, आज आपके सामने और सदन के सामने मुझे एक दुखद सूचना उपस्थित करनी पड़ रही है। आप सब जानते हैं कि २४ तारीख को विमान दुर्घटना से हमारे देश के एक महान् विद्वान डा० होमी जहांगीर भाभा का देहान्त हो गया। जो कि भाभा साहब इस सदन के मेम्बर नहीं थे मगर वह एक विशेष वैज्ञानिक और बहुत उच्च कोटि की प्रतिभा के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक माने जाते थे और भारत के अलावा सारी दुनिया में बड़े श्रेष्ठतम वैज्ञानिक हुए। भाभा साहब का जन्म १९०९ में हुआ था और उन्होंने बाम्बे और कैम्ब्रिज में शिक्षा पाई थी। शिक्षा काल में उनकी प्रतिभा बेजोड़ और प्रखर बुद्धि की थी और शिक्षा प्राप्त करने के बाद आते ही बहुत जिम्मेदारी का काम उनको सौंपा गया था। सन् १९४१ में वे फेलो आव दि रायल सोसाइटी चुने गये और १९४२-४५ में वे बंगलौर के कास्मिक-रे रिसर्च यूनिट के इन्चार्ज रहे। इस समय उन्होंने बहुत अनुसन्धान और रिसर्च के उच्च कोटि के काम किये। सन् १९५४ में उन्होंने इंडियन साइन्स कांग्रेस को प्रेसाइड किया। १९५४ में उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि दी गई। टाटा इन्स्टीट्यूट आफ

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

फन्डामेन्टल रिसर्च उन्होंने स्थापित किया और इस संस्था में बहुत से अनुसन्धान के उच्च कोटि के काम होते रहे। पिछले पन्द्रह सालों का ज्यादातर समय उन्होंने इसमें बिताया कि इंडियन अटामिक इनर्जी का कैसे प्रसार हो, कैसे अनुसन्धान बढ़े। अटामिक इनर्जी कमीशन के वे चेयरमैन रहे। इन पन्द्रह सालों में, जिस दिन से वे काम कर रहे थे, जो पुअर साइंटिस्ट हैं वे सोचते होंगे कि इतना बड़ा साइन्टिस्ट अपन काम क साथ ऐडमिनिस्ट्रेशन की तरफ कैसे ध्यान देता होगा। मगर जो काम उन्होंने अपने हाथ में लिया चाहे वह रिसर्च का काम था या संगठन का, दोनों में उन्होंने पूरी प्रतिभा दिखाई। पिछले पन्द्रह सालों में अटामिक रिसर्च क संबंध म भारतवर्ष में जो कुछ काम हुआ है वह उन्होंने अकेले ही बनाया है। इस काम में संगठन शक्ति और टीम के हेड होकर अपने साथियों को प्रेरणा देने का जबरदस्त काम किया। इस समय आप सब जानते हैं कि वे जेनेवा की एक मीटिंग में भाग लेने के लिये जा रहे थे। इन्होंने जो रिसर्च किया है कास्मिक-रे का वह दुनिया में महान् रिसर्च माना जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत न भी इनको बहुत सम्मान दिया। इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स आफ पीसफुल यूजज आफ अटामिक इनर्जी के वे चेयरमैन थे और वे फेलो आफ वर्ल्ड अकाडमी आफ साइन्स के फलो असोसियेट माने गये थे जो कि बहुत बड़ा सम्मान माना जाता है। आपकी मृत्यु से न सिर्फ राष्ट्र को हानि पहुंची है बल्कि अटामिक रिसर्च के काम में कितनी बाधा पड़ेगी हम समझ नहीं सकते। गोकि हम साइन्स में तीसरे मुल्क माने जाते हैं मगर भारतवर्ष में जो अटामिक रिसर्च हो रहा है उसमें हम काफी तरक्की पा रहे हैं। इनकी मृत्यु से इनका कौन स्थान ल सकता है यह चिन्ता का विषय है। इससे न कवल राष्ट्र क लिये क्षति हुई है बल्कि सारी दुनिया की क्षति हुई है। मैं इस सदन की तरफ से और अपनी तरफ से ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दे और इनके संतप्त परिवार को शान्ति दे।

*श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)--

मान्यवर, माननीया मुख्य मंत्री ने जो स्वर्गीय भाभा जी के बारे में भावनायें प्रकट की हैं उनसे मैं विरोधीदल और अपने दल को सबद्ध करता हूं। उनके गुणों की चर्चा माननीया मुख्य मंत्री ने की। मैं उसको दुहराना नहीं चाहता। केवल इतना ही कहूंगा कि सचमुच इस देश पर पता नहीं भगवान की क्या अप्रसन्नता है कि संकट पर संकट आ रहा है। श्री भाभा की मृत्यु से अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान में बहुत बड़े साइन्टिस्ट को क्षति हुई और हमारे देश में जहां अटामिक एनर्जी का संगठन हुआ था, चाहे शान्ति के कार्य के लिये, चाहे दूसरे कार्य के लिये, एटम के प्रयोग क लिय हम मार्गदर्शन चाहते थे। हम भाभा की तरफ आंखें उठाकर देखते थे। हम जानते थे कि जैसे इस देश को सम्पन्न किया है वसे ही बहुत बड़ा साइन्टिस्ट भी हमें प्रदान किया है, जिस पर हमको बड़ा गर्व है।

जब लड़ाई सामने आयी और उस राष्ट्रीय संकट के समय जब एटम बम की बात होती थी तथा दुश्मन द्वारा उसके प्रयोग की बात होती थी तो हम बड़े विश्वास और साहस के साथ अपनी आंखें उठाकर डाक्टर भाभा की तरफ देखते थ। जैसा कि हमारी माननीया मुख्य मंत्री ने कहा कि अनुसन्धान कार्य को मूर्तमान करने में वे कितन सफल और कुशल थे, ऐडमिनिस्ट्रेशन में भी और एटामिक एनर्जी संबंधी व्यक्तियों के संगठन में भी वे कितने कुशल थे। अगर इस पर विचार करें तो श्रीमन्, सचमुच ही यह ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

श्रीमन्, और मैं क्या कहूं, यह बहुत बड़ी राष्ट्रीय क्षति है, परन्तु इस भरोसे पर कि वे हम लोगों को मार्ग दर्शन कर गये, कभी कभी यह चर्चा आ जाती है कि ऐसी विचित्र स्थिति में उनकी विमान यात्रा में एकाएक मृत्यु हुई, जिसमें संभव है कि कोई विशेष चीज हो। यदि किसी का स्वास्थ्य पहले से बहुत खराब हो और उसकी मृत्यु हो जाती है

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी]

तो उस पर उतनी चोट नहीं लगती है जितनी चोट इस परिस्थिति में लगती है जिसमें माननीय डाक्टर भाभा की मृत्यु हुई। जेनेवा जाते हुए, एक विमान दुर्घटना में वे मरे हैं, अब मुझे मालूम नहीं कि किस परिस्थिति में यह दुर्घटना हुई, लेकिन मैं समझता हूं कि यह हमारे राष्ट्र के लिये ही नहीं बल्कि सारी दुनिया के लिये बहुत बड़ी क्षति है। इन शब्दों के साथ मैं चाहता हूं कि हम लोगों की समवेदना आप उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

श्री रामसुन्दर पाण्डेय (जिला आजमगढ़)—

माननीय उपाध्यक्ष जी, जब डाक्टर भाभा की जेनेवा में मृत्यु का समाचार रेडियो से सुनने को मिला, उस वक्त इस देश के सभी नागरिक और दुनिया के वैज्ञानिक युग को चलाने वाले लोग स्तम्भित रह गये कि आखिरकार हिन्दुस्तान में क्या होने वाला है कि जनवरी, १९६६ के प्रारम्भ में ही एक से एक महारथी भारत से बहुत दूर चलते चले जा रहे हैं। श्रीमन्, डाक्टर भाभा की मृत्यु से अपने देश और विदेश के वैज्ञानिक युग की अपार क्षति हुई है। श्रीमन्, मुझे यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनके नेतृत्व में देश के अन्दर वे सारी चीजें बनायी जा रही थीं जिनकी आज हमें बहुत आवश्यकता थी। देश के अन्दर जब पाकिस्तान के मुकाबले में राष्ट्रीय संकट आया था, उस वक्त भी बहुत से लोग सोचने लगे थे कि आखिरकार आज के जमाने में जब कि हमें बहुत आधुनिक अस्त्र-शस्त्र की आवश्यकता है, भारत जो अहिंसा का पुजारी है, कैसे इसको पूरा कर पायेगा, लेकिन जब लोगों ने देखा कि डाक्टर भाभा के योगदान से हमने इस दिशा में काफी प्रगति की है तो लाखों करोड़ों लोगों ने उनके विवेक और खोज की तारीफ की। अधिक न कहकर मैं आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी समवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा देने की कृपा करें।

श्री जेड० ए० अहमद (जिला आजमगढ़)—

उपाध्यक्ष महोदय, डाक्टर भाभा की यकबयक मौत से हमें जो सदमा का अहसास हुआ है उसको मैं रेकार्ड करवाना चाहता हूं। इसमें कोई शक नहीं कि उनकी मौत से हमारे मुल्क की अटामिक एनर्जी की बहुत बड़ी हानि होने वाली है। इसमें कोई शक नहीं कि अगर डाक्टर भाभा जिन्दा रहते तो इस मुल्क की तरक्की में उनका एक बहुत बड़ा रोल होता। उनके इस समय इस दुनिया से चले जाने से न सिर्फ हिन्दुस्तान की बल्कि सारी दुनिया की बहुत बड़ी क्षति हुई है क्योंकि वे इस दुनिया के बहुत बड़े साइंटिस्ट थे। वे ऐसी परिस्थिति में यहां से चले गये जब कि उनकी यहां बहुत जरूरत थी। दरअसल यह हमारे लिये एक बहुत ही अफसोसनाक हादसा है। मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से उनकी मौत पर सख्त अफसोस का इजहार करता हूं और आपसे दरख्वास्त करता हूं कि हमारी समवेदना उनके खानदान वालों तक पहुंचा देने की कृपा करें।

*श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)—

उपाध्यक्ष जी, डाक्टर भाभा के निधन पर जो शोक का प्रस्ताव नेता सदन ने रखा है उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। मैं माननीया मुख्य मंत्री का इस पर भी विशेष रूप से आभारी हूं कि उन्होंने आज एक बहुत बड़े वैज्ञानिक के निधन पर इस सदन में शोक का प्रस्ताव रख कर एक नयी परम्परा डाली है और यह सराहनीय है। मैंने उनको इस विषय में पत्र भी लिखा था और मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने ऐसे उच्च कोटि के वैज्ञानिक के निधन पर शोक प्रस्ताव रखकर देश के वैज्ञानिकों का उत्साह बढ़ाया है। मैं ज्यादा न कहकर क्योंकि माननीया मुख्य मंत्री जी ने काफी प्रकाश उनके जीवन पर डाल दिया है, केवल इतना ही

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कहना चाहता हूं कि आज भारत को संसार के नक्शे पर जहां तक अटामिक शक्ति का संबंध है रखने का श्रेय केवल भाभा जी को ही था। यद्यपि राजनीतिक कारणों से हमारे शासकों ने एटम बम न बनाने का निर्णय किया, लेकिन यह विश्वास सदैव रहता था कि श्री भाभा के प्रयत्नों के फलस्वरूप फिर कभी भी यदि देश निर्णय करेगा कि एटम बम बनाया जाय तो वह श्री भाभा द्वारा बनाया जा सकेगा। सम्भवतः इस देश के लोग शायद न जानते हों, लेकिन डा० भाभा की जो प्रतिष्ठा विदेशों में रही है और जब कभी भी किसी बाहर की पत्रिका में एटम बम की चर्चा चलती थी तो जिन देशों में एटम बम हैं उनके बाद यदि किसी की गणना होती है कि कौन एटम बना सकता है या अटामिक ताकत को आगे बढ़ा सकता है तो भारत का नाम आता था और उसका श्रेय केवल श्री भाभा को ही था। उनके निधन से इस क्षति की पूर्ति होगी इसमें हमें बहुत सन्देह है। इस देश का दुर्भाग्य है जैसा कि माननीय नेता विरोधी दल ने कहा कि एक के बाद एक आघात लगते जाते हैं, लेकिन साहस की आवश्यकता है, इसी प्रकार से राष्ट्र की परख होती है। इन शब्दों के साथ उस महान वैज्ञानिक के प्रति मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इस तरह की विभूतियां इस देश में और भी आयें।

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)—

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन ने जो समवेदना का प्रस्ताव डा० भाभा के संबन्ध में प्रस्तुत किया है और जो विचार प्रकट किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। पिछले दिनों जब पाकिस्तान से लड़ाई हो रही थी उस वक्त भाभा साहब को बुलाया गया था और जब उनसे कहा गया कि क्या आप एटम बाम्ब बना सकते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया था कि एटम बाम्ब बना सकते हैं लेकिन उसके बनाने के लिये जो साधन चाहिये वह इतना अधिक होगा कि उनको यदि हम एटम बम्ब बनाने में न खर्च करके देश की उन्नति के लिये लगायें तो ज्यादा अच्छा होगा। वह ५ अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में से एक थे। वह मानव जाति के लिये शांतिमय तरीके से मानव उन्नति के लिये एटम शक्ति का प्रयोग करना चाहते थे। शांति के लिये अणु शक्ति का कैसे प्रयोग हो इसलिये जिनेवा कान्फ्रेन्स में भाग लेने जा रहे थे। और विश्व की उन्नति के लिए अणु-शक्ति उत्पन्न करना चाहते थे, विश्व की बरबादी के लिये नहीं। हमें बहुत दुख है कि ऐसे मानव का एयर क्रेश से निधन हुआ और वह नहीं रहे। जैसा कि हमारे नेता विरोधी दल ने कहा कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि एक के बाद एक महान पुरुष चले जा रहे हैं परन्तु जैसा कि दिल्ली में रामलीला मैदान की मीटिंग में जनसंघ के एक माननीय नेता ने कहा था कि हमें साहस से काम लेना चाहिये, मां की गोद भले ही सूनी हुई है, लेकिन उसकी कोख सूनी नहीं हुई है। देश में उन जैसे वैज्ञानिक अवश्य पैदा होंगे। इन शब्दों के साथ मैं अपने और अपने दल की ओर से डा० भाभा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि संतप्त परिवार तक हमारी समवेदना भेजने का कष्ट करें।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैं भी अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से माननीय नेता सदन ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे अपने विचारों को सम्बद्ध करता हूं। देश का इतना बड़ा वैज्ञानिक जिसका दुनिया में नाम था और जिससे हमें आशा थी कि वह वक्त जरूरत पर देश में एटम बम बनायेंगे और ७०–७५ करोड़ की लागत से यदि एटम बम बनाने की बात तय होती तो हमें निश्चय ही सबसे बड़ी मदद उनसे मिल सकती थी। इतने बड़े साइन्टिस्ट की जिन्दगी को मौत ने हमसे छीन लिया और यहां हमें सोचना पड़ता है कि इन्सान की जिन्दगी मौत से हारती है। जिस इन्सान के हाथ में करोड़ों इन्सानों की जिन्दगी, मौत मौजूद थी उसको आसानी से एक हवाई जहाज की टक्कर ने हमसे ले लिया। श्रीमन्, एक दिन

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री बलवानसिंह]

पहले वे जाने को थे। उनका टिकट भी तैयार था। यकायक उनके दिल में कुछ परिवर्तन आया और उन्होंने अपना टिकट वापस करके अगले दिन के लिये बुक करा लिया। यह जिन्दगी और मौत का एक उनका नक्शा था, जिसको हम नहीं समझ सकते हैं। डा० भाभा के निधन से राष्ट्र को जो हानि हुई है उससे हम सब को अत्यन्त दुख है और म आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मरी ओर से और हमारे दल की ओर से हमारी समवेदना उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

*श्री बनवारीलाल विप्र (जिला आगरा)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस शोक प्रस्ताव से पहले हुमने अपने महान् नेता के संबंध में जो शोक प्रस्ताव रखा था, उसके संबंध में सदन के नेता और माननीय नेता विरोधी दल ने जब अपने विचार व्यक्त किय, उसी समय मेरे दिल में भी यह भावना पैदा हुई कि हमारे देश में एक और महान क्षति हुई है, उसके संबंध में भी एक प्रस्ताव लाया जाय। मैं समझता हूं कि माननीया मुख्य मंत्री सदन में जो प्रस्ताव लायी हैं, उससे न केवल इस सदन का ही गौरव बढ़ा है बल्कि एक नयी परम्परा पड़ी है, जिससे हमारे प्रदेश का गौरव बढ़ा है। जनवरी, १९६६ हमारे लिये किस तरह का वातावरण पैदा करेगा, इसे हमें सोचना है। इस माह में जितनी हमारे राष्ट्र की क्षति हुयी है, उससे हमारा यह नतिक कर्तव्य हो जाता है कि हम आन वाले संकटों को हर तरीके से सोचते रहें कि कोई विशेष घटना हमारे देश में न हो जाय। हमारे देश में श्री लाल बहादुर शास्त्री का स्थान हमारे देश के प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने ले लिया लेकिन डा० भाभा का स्थान कौन लेगा, यह कहना हमारे लिये मुश्किल है। हमारे मस्तिष्क में कोई नाम भी नहीं जो उनका स्थान ले सके और इस महान क्षति की पूर्ति कर सके। मैं यह महसूस करता हूं कि हमारे देश को एक महान वैज्ञानिक की आवश्यकता थी पर देश का दुर्भाग्य है कि वे इस समय नहीं रहे। वैज्ञानिक क्षेत्र में हिन्दुस्तान को दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था परन्तु डा० भाभा के रहते हुए हम लोग तरक्की की तरफ जा रहे थे। मैं यह महसूस करता हूं कि राष्ट्र की जो इतनी बड़ी क्षति हुई है, उसे वह सहन करेगा और मैं यह विश्वास करता हूं कि आगे चल कर जो यह क्षति हुई है, उसको भी सहन कर सकेगा।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी और अपने दल की ओर से समवेदना प्रकट करता हूं और माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करूंगा कि हमारी भावनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे ताकि वे इस क्षति को सहन कर सकें।

श्री उपाध्यक्ष—

जो भावनायें माननीय सदस्यों ने इस सदन में डा० भाभा के निधन पर व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। डाक्टर भाभा, सर्वमान्य बात है, दुनिया के एक बड़े साइंटिस्ट थ। एटामिक इनर्जी के लिये उनके बराबर कोई दूसरा साइंटिस्ट, हमारे मुल्क में ही नहीं दुनिया में भी बहुत कम हैं। उनके निधन से हमको बड़ी क्षति हुयी है। साथ ही साथ उनकी मौत इस ढंग से हुयी है कि वे एक दिन पहले जेनेवा में एक कान्फ्रेंस एटैन्ड करने जाना चाहते थे। पहले दिन उन्होंने अपनी सीट कैन्सिल करा दी पर दूसरे दिन जिस जहाज से वे गये, वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया और वे न रहे। हम यह महसूस करते हैं कि उनकी क्षति की पूर्ति निकट भविष्य में होना असम्भव सी बात है। मैं अपनी ओर से तथा सदन की ओर से प्रकट की गई समवेदना संतप्त परिवार तक भेज दूंगा।

अब हम सब लोग खड़े होकर उनकी आत्मा की शान्ति के लिये १ मिनट तक प्रार्थना करें।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर १ मिनट के लिये खड़े हुए।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सर्वश्री खुशवक्त राय, लाल उदयभानसिंह, महाराजकुमार विजयानन्द आफ विजयानगरम् तथा मुहम्मद सुलेमान अधमी के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)—

उपाध्यक्ष महोदय, ऐसा मुझे मालूम होता है कि आज मुझे बार-बार सदन के सामने शोक प्रस्ताव लाने पड़ रहे हैं। चार हमारे पुराने साथी इस संसार में नहीं रहे। श्री खुशवक्त राय, श्री लाल उदय भान सिंह, श्री विजयानन्द आफ विजयानगरम् और श्री मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री खुशवक्त राय जी का देहान्त १७ नवम्बर, १९६५ को हुआ। वह इस सदन के सदस्य १९३७ और १९३९ में तथा १९४६–५२ तक रहे। वह लखीमपुर जिले के थे। वह लखीमपुर म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में भी रहे। वह कांग्रेस के फाउन्डर मेम्बर थे तथा उसके बाद के० एम० पी० पी० के भी मेम्बर थे। १९५७–६२ तक लोक सभा के मेम्बर रहे। उन्होंने बहुत त्याग किया था। मैं अपनी हार्दिक समवेदना उनके संतप्त परिवार के प्रति प्रकट करती हूं।

श्री लाल उदयभानसिंह का देहान्त १० दिसम्बर हो गया। वह रायबरेली के अच्छे समाज सेवी थे और १९५३–५६ तक इस सदन के मेम्बर रहे। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की एजूकेशन कमेटी के चेयरमैन रहे। उनको शिक्षा क्षेत्र में बहुत दिलचस्पी थी। कालविन ताल्लुकेदार कालेज को बढ़ाने के सिलसिले में भी उन्होंने काफी काम किया था। स्वाधीनता संग्राम के अच्छे सेनानी रहे हैं। ६० साल की उम्र में उनका देहान्त हो गया। वह कई बार जेल भी गये। मैं उनके दुखी परिवार के प्रति अपनी समवेदना प्रकट करती हूं।

महाराजकुमार विजयानगरम् की भी २ दिसम्बर, १९६५ को हृदय की गति रुक जाने से एकाएक मृत्यु हो गई। उस दिन नेपाल के महाराजा आये थे उन्होंने उन की दावत की थी और जब मैं बनारस गई तो मैंने सुना कि किसी तरह आतिथ्य भाव में कमी न रहे इस की स्वयं पीड़ा होते हुये भी देख-भाल करते रहे। रात को उन्होंने महाराजाधिराज को खाना खिलाया और बीच रात में उनकी मृत्यु हो गई। वह १९३२–३७ और १९४६–४७ में सेन्ट्रल असेम्बली के मेम्बर रहे। यहां १९३७ में एम० एल० ए० भी थे और मिनिस्टर आफ जस्टिस और जेल्स भी रहे। १९५२–६० तक वह एम० एल० सी० रहे। १९६०–६२ तक लोक सभा के मेम्बर रहे। उन्होंने देश का नाम क्रिकेट में उज्ज्वल किया था और क्रिकेट जगत के लोग उनको विजी के नाम से जानते थे। शिकार की दुनिया में भी उन का नाम था। आपको पद्म विभूषण की उपाधि भी मिली थी। मैं उनके संतप्त परिवार, उनकी पत्नी, वृद्धा माता तक अपनी समवेदना प्रकट करती हूं।

अभी अभी २५ जनवरी, १९६६ को हमारे पुराने साथी श्री मुहम्मद सुलेमान अधमी जो बान गंगा बस्ती जिले से एम० एल० ए० रहे हैं, की एकाएक मृत्यु हो गई। नेशनलिस्ट मुसलमानों में वे अच्छे साथी थे। १९२१ तथा १९४२ में दो दफा वह जेल गये और ४७ से ६२ तक लगातार इस सदन के सदस्य बने रहे। शिक्षा के क्षेत्र में उनको विशेष दिलचस्पी थी। लोकल स्कूल "रतन सैन" के वह व्यवस्थापक थे। स्त्रियों की शिक्षा में उनकी काफी दिलचस्पी थी। सामाजिक कार्यकर्त्ता के नाते एक अच्छे सेवक की क्षति हमको हुई है। मैं प्रार्थना करती हूं कि दिवंगत आत्मा को ईश्वर शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को हमारी ओर से समवेदना की सूचना भेज दी जाय।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय खुशवक्त राय जी के बारे में मुख्य मन्त्री महोदया ने जो भावनायें व्यक्त की हैं मैं विरोधी दल तथा अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं। जब ऐसा कोई सामाजिक कार्यकर्ता अपने बीच से उठ जाता है तो मुझे ऐसा लगता है और जो स्वाभाविक भी है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं की दिन प्रति दिन कुछ कमी होती जा रही है। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि मेरे दल की ओर से समवेदना की भावना उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जाय।

श्री लाल उदयभानसिंह के बारे में जो मुख्य मन्त्री महोदया से मैंने सुना उसको सुन कर भी हम सब लोगों को दुख हुआ ऐसे व्यक्ति को अपने में से खो कर। इस विषय में भी मेरा निवेदन है कि हमारी पार्टी तथा विरोधी दल की ओर से समवेदना की भावनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जायं।

महाराजकुमार विजयानगरम् के बारे में हम लोग पढ़ते थे। उनके गुणों की चर्चा करते हुए माननीय मुख्य मन्त्री जी ने जो कुछ कहा उसको मैं दोहराना नहीं चाहता। उन्होंने क्रिकेट जगत में बड़ा नाम पैदा किया और भारतवर्ष के नाम को ऊंचा रखा। अनेक समाचार-पत्रों में मैंने पढ़ा कि अनेक संस्थाओं के वे सदस्य थे, किसी-किसी के वह प्रधान थे। मैं उनका नाम यहां गिना नहीं सकता। समाज से सम्बन्धित सभी तरह की संस्थाओं में वह भाग लेते थे जिससे पता चलता है कि कितने बड़े सामाजिक कार्यकर्ता वह थे। वाइल्ड लाइफ में भी उनकी बड़ी जानकारी थी और समय-समय पर वह लेख लिखा करते थे। उनकी क्षति भी हमारे लिए बहुत बड़ी क्षति है और मैं प्रार्थना करूंगा कि हमारी समवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जाय।

चौथे व्यक्ति श्री सुलेमान अधमी से मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित हूं। वह असेम्बली के सदस्य थे और कांग्रेस के टिकट पर आए थे। स्थानीय सामाजिक संस्थाओं में वह भाग लेते थे और रतन सेन हाई स्कूल, जो अब इंटरमीडिएट कालेज हो गया है, का मैं विद्यार्थी था, उसके वह व्यवस्थापक थे। समाज के प्रति वे बहुत उत्तम तथा सुशील थे। शायद उनको कैंसर की बीमारी हो गई थी। उन को कदाचित यह जानकारी नहीं थी कि वह कैंसर से बीमार हैं। मैं यह निवेदन करूंगा कि विरोधी दल की ओर से, हमारी पार्टी की ओर से समवेदना की भावनायें उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जायं।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन व विरोधी दल ने, स्व० खुशवक्त राय, लाल उदयभान सिंह, महाराजकुमार विजयानगरम् तथा मुहम्मद सुलेमान अधमी के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को सम्बद्ध करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, कुंवर खुशवक्त राय के पास रह कर कार्य करने का थोड़ा-सा अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। राजनीति में उनकी दूरदर्शिता से हम सभी परिचित हैं। वास्तव में यदि इस प्रकार के सहनशील व्यक्ति राजनीति में रहें तो वह कुंठित न होकर देश को बनाने में सहायक होंगे। लेकिन जब ऐसे व्यक्ति दुनिया से उठ जाते हैं तो हमें सोचना पड़ता है और हमें अंधेरा दिखाई देने लगता है। मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से अपने इन साथियों के दुखी और संतप्त परिवारों को अपनी समवेदना भेजना चाहता हूं। आप दो शब्द उनके परिवार वालों तक पहुंचाने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री झारखण्डेराय (जिला आजमगढ़)—

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो अपनी भावनायें इन मृत व्यक्तियों के प्रति प्रकट की हैं उनके साथ मैं अपने को और अपनी पार्टी को जोड़ता हूं। माननीय खुश वक्तराय जी से मेरा काफी परिचय था। हमारे प्रदेश में १९४२ में एक ही व्यक्ति श्री राजनारायण मिश्र को आन्दोलन के संबंध में ९ दिसम्बर, १९४४ को फांसी की सजा हुई थी। मिश्र को लखनऊ जेल में ही रखा गया था। उस समय मैं भी लखनऊ जेल में था। फांसी से पहले और बाद में भी मेरा श्री खुशवक्त राय से परिचय हुआ था क्योंकि शहीद का स्मारक बनना था। उनके निधन से जो क्षति राजनीति के क्षेत्र में खीरी लखीमपुर में हुई है वह बहुत बड़ी है और वह बहुत दिनों तक अपूर्ण ही रहेगी।

माननीय सुलेमान अधमी बस्ती के रहने वाले थे और मैं भी हाई स्कूल में वहां पढ़ा हूं, इसलिये मेरा उनका परिचय बहुत दिनों से था। उनके निधन से बस्ती जिले का जो पूर्वी अंचल का एक पिछड़ा हुआ जिला है और सियासत में आगे नहीं है, बहुत क्षति पहुंची है। माननीय विजयानगरम् महाराजकुमार विज्जी के नाम से मशहूर हैं। उनके निधन से खेल जगत में एक महान क्षति हुई है। माननीय उदयभानसिंह जी भी इस सदन के सदस्य रह चुके हैं। उनके निधन से भी मुझे अत्यन्त दुख है। इन शब्दों के साथ मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आप से प्रार्थना करता हूं कि हमारी समवेदना उन सभी के शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचाने की अनुकम्पा करें।

*श्री विजयसिंह (जिला जालौन)—

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन,नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने स्वर्गीय खुशवक्त राय, उदयभानसिंह जी, महाराजकुमार विजयानगरम् और माननीय सुलेमान अधमी के संबंध में जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, आज का दिन ही ऐसा है कि पहले तो प्रधान मंत्री के निधन का प्रस्ताव आया जिससे सारे देश का धैर्य और साहस चला गया इसके बाद प्राविधिक शिक्षा के महान योगी माननीय एच० जे० भाभा के निधन का प्रस्ताव आया जिससे हम अपने बौद्धिक विकास से भी निराश हो गये। अब यह चार साथियों के निधन का प्रस्ताव आ गया। हम इन सभी के लिये दुख प्रकट करते हैं। हालांकि मेरा इन साथियों से संबंध नहीं रहा, लेकिन जैसा कि मैंने पढ़ा है महाराजा में जन सेवा की भावना थी और उन्होंने कर्मठ कर्मयोगी के रूप में काम किया। उनकी जनसेवा से हमें काफी सीखना है। इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आप कृपा करके इन भावनाओं को उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)—

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन ने जो माननीय खुशवक्त राय, महाराज-कुमार विजयानगरम्, श्री उदयभान सिंह तथा मौलाना सुलेमान अधमी के निधन के सम्बन्ध में जो विचार और भावनाएं प्रकट की हैं मैं अपने को तथा अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं।

उपाध्यक्ष जी, आप स्वयं जानते हैं श्री खुशवक्त राय आप के साथी रह चुके हैं। वह रफी साहब के ट्रस्टेड लेफ्टिनेंट थे, उनमें दो विशेषताएं थीं। उनको गरीबों के प्रति प्रेम था। वह बहुत अच्छे लाइयर थे। वह सारे मुकदमें मुफ्त किया करते थे। वह इतने लोकप्रिय थे कि चुनाव में हमेशा जीतते थे। जिस वक्त जुडीशियरी और लेजिस्लेचर का झगड़ा इस सदन में उठा तो उन्होंने मुझे पत्र लिखा, सभी कार्यवाही मंगाने का। वह बड़े हिमायती थे लेजिस्लेचर के। समय-समय पर जो बिल पेश हुआ करते थे वह पत्र लिख कर मुझसे मंगा लिया करते थे। आजादी की लड़ाई में वह सबसे आगे रहे। रावत जी, त्रिलोकीसिंह जी, शिब्बनलाल सक्सेना जी उनके

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री नेकराम शर्मा]

साथी थी। उन साथियों में एक साथी नहीं रहा। बड़े दुख की बात है। मेरा उनसे व्यक्तिगत परिचय था। वह जब यहां के सदस्य थे तो हम लोगों को काफी ज्ञान देते थे। उनका चला जाना बहुत दुख की बात है। मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की तरफ से प्रार्थना करता हूं कि आप हमारी समवेदना उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

महाराजकुमार विजयानगरम् बहुत बड़े क्रिकेट के खिलाड़ी थे। एक बार लेजिस्लेटर्स और पत्रकारों का मैच हुआ। उसमें विधायक श्री बालेन्दुशाह बहुत अच्छा खेले। उन्होंने कहा कि हमारी असेम्बली और काउंसिल में ऐसे लेजिस्लेटर्स हैं जो बहुत अच्छे क्रिकेट के खिलाड़ी हैं। उन्होंने खेल की दुनिया में बहुत बड़ा नाम कमाया।

दूसरे जो हमारे दो साथी थे श्री उदयभान और श्री अधमी वह भी आज नहीं रहे। उनके परिवारों को हमारी तरफ से और हमारे दल की तरफ से उस प्रस्ताव के सम्बन्ध में जो हमारी भावनाएं हैं, उनको उनके संतप्त परिवार को पहुंचा देने की कृपा कर दें।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)---

श्रीमन्, मैं अपने और अपनी पार्टी के विचारों को नेता सदन से जोड़ता हूं। हमारी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के श्री खुशवक्त राय एक बड़े नेता थे। वकालत में उनका कोई सानी नहीं था। वह पार्लियामेंट में जब कभी कोई बड़ा मसला आता था हमेशा राय देते थे। जब बुनियादी सवाल आते थे तो हमेशा कानूनी राय दिया करते थे जिससे बड़ी सहूलियत होती थी। खीरी के अन्दर वह बीस साल से ज्यादा एजूकेशन बोर्ड के चेयरमैन रहे। म्युनिसिपैलिटी के भी चेयरमैन रहे। जनता उनके नाम पर हमेशा उनके साथ रही। वह १९३७-३९ तक एम० एल० ए० रहे। १९५० में कांग्रेस पार्टी छोड़ी। पार्लियामेंट के मेम्बर १९५२ से १९६२ तक रहे। उनके निधन से बहुत बड़ा नुकसान हुआ है।

उसके साथ महाराजकुमार विजयानगरम् एक बहुत बड़े खिलाड़ी थे। उनका नाम क्रीकेट के अन्दर मशहूर था। लोग कहते थे कि उनसे अच्छा कमेन्टेटर कोई नहीं था। आंध्र प्रदेश में उन्होंने तीस लाख रु० सैनिक स्कूल के लिए दिया। १९३८ में नाइट का खिताब मिला, जिसको आजादी मिलने पर उन्होंने छोड़ दिया। बाद में उनको पद्मविभूषण का भी खिताब मिला। जहां भी हुआ जितना भी हुआ, उन्होंने अपना जीवन और तन मन धन खेल के लिये दिया। इनके साथ-साथ मैं स्व० श्री उदयभान सिंह और श्री सुलेमान अधमी जो कि एक ऊंचे सामाजिक नेता थे, उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक प्रकट करता हूं। कृपया हमारी और हमारे दल की समवेदना उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री उपाध्यक्ष---

माननीया मुख्य मन्त्री, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने चार स्वर्गीय नेताओं के सम्बन्ध में जो अपने विचार प्रकट किए हैं, उनसे अपने को मैं सम्बद्ध करता हूं। स्व० खुशवक्त राय जी के साथ काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सन् ३७ से ५२ तक वह यहां पर असेम्बली के सदस्य थे और मैं भी उनके साथ सदस्य था। वह अपनी धुन के पक्के आदमी थे और उन्होंने अपने जिले और अपने प्रदेश की काफी सेवा की थी।

महाराजकुमार विजयानन्द आफ विजयानगरम के बारे में पत्रों में बहुत चर्चा रही। हम सभी जानते हैं कि उन्होंने खेलों में ऐसी ख्याति प्राप्त की जैसी शायद बहुत कम लोगों ने की होगी। वह यहां पर असेम्बली के सदस्य भी थे, लोक सभा के भी सदस्य रहे। राजनीति में रहते हुए भी खेल में उन्होंने काफी नाम कमाया। वह काफी बड़े समाजसेवी भी थे। उनके निधन से खेल-जगत की अपूर्ण क्षति हुई है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

इसके साथ-साथ में स्व० उदयभान सिंह और स्व० सुलेमान 'अधमी' भी हमारे इसी सदन के सदस्य रह चुके हैं, वे बड़े योग्य व्यक्ति थे, उन्होंने देश की बड़ी सेवा की है। मैं इन सबके निधन पर अपनी शोक समवेदना प्रकट करते हुए इस सदन के सभी माननीय नेताओं की भावनाओं को उन सभी स्वर्गीय नेताओं के शोक-सन्तप्त परिवारों तक भेज दूंगा। अब एक मिनट के लिए हम लोग खड़े होकर समवेदना व्यक्त करें।

(सभी सदस्य १ मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।)

श्री उपाध्यक्ष—

अब हम उठते हैं और कल ११ बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन ४ बजकर १२ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
२७ जनवरी, १९६६।

विधान सभा

पी० एस० यू० पी०—ए० पी० २०० एल० ए०—१९६६—८६२।